प्यारेविनोद

जिसमें

शिव, राम, कृष्णादि अवतारों की महिमा वर्णित है

जिसको

मुन्शी जानकीप्रसादात्मज प्यारेलाल ने रामभक्तों
के मनोरंजनार्थ बनाया

प्रथमबार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध
मुन्शी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के छापेख़ाने में छपा

सन् १९१० ई० ।

३ जुज़ ६ वर्क़

अथ प्यारेबिनोद ।

जिसमें

अत्युत्तम मनोहर दोहा, चौपाई, छन्द, सोरठा, कबित्त व सवैयादि छन्दों से श्रीमहादेवजी व कृष्णचन्द्र व रामादि अवतारों की स्तुति वर्णित है ।

जिसको

जिला बारहबंकी तहसील फ़तेहपुर परगना कुरसी जमुवांनगरनिवासी मुंशी प्यारेलाल कायस्थवंशावतंस पुत्र लाला जानकीप्रसाद ने अत्यन्त परिश्रम से शिव व रामजी के भक्तों के अनुराग के लिये रचना किया ॥

प्रथमबार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए, के प्रबंध से
मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ
सन् १९१० ई० ।



अथ प्यारेबिनोद प्रारम्भः ॥

दो० शारदकेपद बंदिकै, गुरूकेचरण मनाय।
शम्भुश्याम स्तुतिकछू, भाषों मनचितलाय॥
चौ० प्रथम गुरूके चरण मनाऊं। जेहि प्रताप यह स्तुति गाऊं॥ पुनि शारदकेचरणन ध्याऊं। मातु चरणपंकज तौ गाऊं॥ जो कछु भूलपरै लखिमोरी। करेउ शुद्ध कहुँ दोउ करजोरी॥ पुनि बन्दों श्रीनन्दकुमारा। जेहि प्रताप उतरों भवपारा॥ मैं जन नीच सहितपरिवारा। कृपाकरो बसुदेवदुलारा॥ ज्ञानखानि प्रभु मोहिं कछु नाहीं। नहिं बड़िप्रीति अहै मोहिं पाहीं॥ कोउ

बड़ साधन नाहिं कृपाला । कबिता कृत नहिं दीनदयाला ॥ पुनि बन्दों श्रीपवनकुमारा । जेहि प्रताप त्रैलोक्य अपारा ॥ जाके सुमिरण ते अघ हानी । पवनकुमार सो राम बखानी ॥ बड़ बड़ काज करेउ रघुबर के । तोरेउ सकल मान निशिचर के ॥

दो०जयजय पवनकुमार प्रभु, रघुबर प्राण अधार ।
करजोरे बिनती करों, राखौ मोर दुलार ॥

चौ० पुनि बन्दों द्विजबृन्द अपारा । जेहि भरोस मोहिं बिबिध प्रकारा ॥ फिरि बन्दों बिरंचि शिरनाई । जेहि जगसृष्टि बिबिध उपजाई ॥ पुनि बन्दों यमराज प्रबीना । हरि हर बिमुख ताहि दुखदीना ॥ करजोरों धर्मराज सुहावा । हरि भक्तन जेहि कंठ लगावा ॥ चित्रगोपित्र कहों

करजोरी । सबबिधि नाथ मोरिमति थोरी ॥ पुनि बन्दों जगतीरथ जेते । तमभयो दूरि दरश कियो तेते ॥ पुनि बन्दतहों तीरथराजा । दरशन करत सकल अघ भाजा ॥ फिरि जेहि राजबसों तेहि गाऊं । जाकी राज बिबिध सुखपाऊं ॥ पुनि बन्दों ऋषि बृन्द घनेरा । जिन सुरसरि तट कीन बसेरा ॥ बन्दतहों सुरलोक के बासी । धन्यधन्य तुमहौ सुखरासी ॥

दो०रामचरणरति मानिके, निशिबासरलौलीन्ह ।
जायपधारेहु ग्रामहरि, जन्मसुफल करिदीन्ह ॥

चौ० पुनि बन्दों सचराचर जाती । कृपाकरो सब मिलि बहुभांती ॥ फिरि बन्दों कवि जगत निवासा । तुम्हरी कृपा करों परकासा ॥ बन्दों तुलसिदासकेचरणा । रामचरित्रभांतिबहुबरणा ॥

बासुदेव अरु व्यास मुनिन्दा । बालमीकि अरु सकल ऋषिन्दा ॥ पुनिबन्दौं सज्जन जगकेरे । हरिचरित्र जिन हृदय बसेरे ॥ फिरि बक्रनमुख पङ्कजगावैं । हरिहर गुण जो सबहि सुनावैं ॥ पुनि बरणौं लालता भवानी । सुभगस्वरूप दयाकी खानी ॥ जय जय दुष्टदलनि महरानी । ममरसना परबैठु भवानी ॥ शंकर सुयश पयोधि अपारा । केहि बिधिसे हम पावहिंपारा ॥ जो कछु भूलपरै लखि मोरी । सुजनौ क्षमेउ कहौं करजोरी ॥

दो० शंकर यश शंकरलहैं, कोउ न जानत और ।
मैं पापी केहिबिधि लहौं, अजामीलसे घोर ॥
उर मैं याही आश है, पूरकरैं गौरीश ।
उनके पद सरसिज भजे, पापहोत सबखीश ॥

सो० राधाकृष्ण कृपालु, सब बिधिसों अवतारते ।

होइहैं सोइ दयालु, ममभूरखपर कृपाकरि ॥
भक्ति नहीं मोहिंपास, नहीं दामहैं दानको।
यकरसनाकी आस, सोऊ उनहीं की कृपा ॥

त्रिभङ्गीछन्द। गणनायकचरणा तम दुखहरणा प्रथमै बरणा पापजरं। गजबदन बिराजा धनि महराजा सबबिधि काजा शोकहरं॥ जय जय जय ईशा पुत्र महीशा देव ऋषीशा ध्यानधरं। जन प्यारे कहई काव्य न अहई भूल जो परई शुद्धकरं॥ १॥

सवैया। इकदन्त बिराजत है मुखमें अरु बाहन मूष कि है असवारी। सुर बृन्दन ध्यान धरों प्रथमै बहु योगी मुनीशन पूजा सँवारी॥ गिरिनन्दिनि के सुत तोहिं नमों सब शुद्ध कियो भूल चूक हमारी। शुद्ध अशुद्ध को ख्याल

नहीं जन प्यारेको है बड़ि आश तुम्हारी ॥ २ ॥

त्रिभङ्गीछन्द। जय शारद माता जन सुखदाता दुष्टनघाता सर्वकरं। जय जय महरानी ज्ञान सयानी वेद बखानी काज सरं ॥ मृगराज सवारी शम्भु पियारी मुनिगण झारी ध्यान धरं। जन प्यारे आशा चरणोंदासा पूरकराशा ज्ञानभरं ॥ ३ ॥

सवैया। मोहिं आश बड़ी है शारद मातुकी सेवा सबैविधि पारकरैंगी। मातुमेरी रसनापर आइ के जो कछु भूलों बतावा करैंगी ॥ शूल लिये कर शीश पै चूनर चारों भुजा मम पृष्ठधरैंगी। प्यारे कहै कविताई नहीं मेरी झांझर नैया को पार करैंगी ॥ ४ ॥

दो॰ हे गुरुदेव दयालु मोहिं, अहै भरोसो तोर।

तुम्हरे पद पंकज भजे, काज बनैगो मोर ॥ ५ ॥
सवैया । शंकर शम्भु कृपालु दयानिधि दाया
करो अब शम्भु पुरारे । चित्तहिसे तुम भूलत नाहिं
जपौं मैं सदा शिव नाम तुमारे ॥ पूजा औ पाठ
कछू न सधै हम सोतो कहैं सब सांच पुकारे ।
कोइ सज्जन माहिं प्रबन्ध नहीं जन प्यारे तो
केवल आश तुमारे ॥ ६ ॥ तुम्हरी नहिं जानि
परै जगमें शिव जानत ना कछु भेद तुमारे । शेश
गणेशहु पार न पावत मैं मतिमंद कहांहौं गवांरे ॥
जेहि ईश को जोगी मुनीश जपैं बहु कालनलौं
तप पुंज सँवारे । जन प्यारे कहै तेउ पार न
पावत मानुष हैं कहँ मूढ़ बिचारे ॥ ७ ॥ निश्चर
घोर प्रचंड भये उतपात करैं पुहुमी अकुलाना ।
रावण औ अहिरावण भे घननादहु बीर महा

बलवाना ॥ तप पुंज सबै तुम्हरी शिव कियो गुण औगुण को कछु ना पहिंचाना। ऐसे दयालु अहौ हर जो कहै प्यारे दियो अतिशै बरदाना ॥ ८ ॥ बरदान को पाय भये बरियार फिरैं तिहुँलोक न शंकहि माना। मुनि योगिन से बहु दंड लियो तब भागिमही है कहूँ न ठिकाना ॥ धेनु को रूप धरेउ तुरतै चली पास जहां बिधिलोक बखाना। जायके हाल कहेउ सगरो जनप्यारे सबै सुर सोचहि माना ॥ ६ ॥ उठिके तो सबै सुर ढूंढ़त हैं जग बन्दन को कहिं खोज न पायो। तुम शंकर जो तहँ दीनभतो सबहीं थलमें हरिवास बतायो ॥ बैठि अराधत ईश्वर को घन मंडल सों असवानी सुनायो। मन बांछित सो वर मांगि लियो जन प्यारे तहां शिव साधु कहायो ॥ १० ॥ ऐसी

सरकार को जे नर भूलत पार कहीं नहिं पावत हैं। उनकी मैं तौ पुण्य उदोत गनौं शिवशंकर को जे ध्यावत हैं ॥ आन भरोसो नहीं जगमें इक शंकर आश लगावत हैं। जन प्यारे कहै वै धन्य अहैं शिवदासन दास कहावत हैं ॥ ११ ॥ नित छांड़ि विषै जग जालन को पद पंकज शम्भु मनावत हैं। पति पारबती पति पारबती शिव शंकर शंकर गावत हैं ॥ चन्द्रशेखर हे त्रिपुरारि त्रिलोचन जय रट शम्भु लगावत हैं। जनप्यारे कहै वै धन्य अहैं शिव दासन दास कहावत हैं ॥ १२ ॥ भस्म त्रिशूल बिभूति अहै अरु देवनमें मुदमंगल कारी। बाहन बैल औ केहरि को अरु पार्वती अर्द्धङ्गिनि नारी ॥ नारद शारद और मुनी सब ध्यान धरैं तुम्हरो नर भारी। सो तो कृपा तो

करो हर जो जन प्यारे को केवल आश तुमारी ॥ १३ ॥ भूत औ प्रेत पिशाच अहैं अरु योगिनि गावत कै अति शोरा। ताल बजाय चलै बैताल औ वाहन भागि चलै बरजोरा॥ केहरिनाद करै गम्भीर औ व्यालनको शिर शोभित मौरा। सोई स्वरूप हृदय में बसौ उर प्यारे के शम्भु सदा सह गौरा॥ १४ ॥ शंकर जो बड़दानी अहौ अरु देवन में बड़दानी कहायो। ध्यानधरै तुम्हरो नर जो तेहि के समतोहिं कोऊ नहीं भायो॥ ऋद्धि औ सिद्धि सबै फलदायक जो जन तौ मन ध्यान लगायो। जन प्यारे कहै शिव विकार हरौ तन-ताप हरौ सब पाप नसायो॥ १५॥ शंकर दुष्टन को कुलघालक संतन को प्रतिपालनकारी। वेद पुराणभनै तुमको शिव दुष्टनको तमवारिधि भारी॥

भक्त जो गानकरै तुम्हरो यश ताकहँ हौ मुदमंगल कारी। प्यारे कहै सोई दृष्टिसों हेरिकै शंकर जो मोहिं आश तुमारी ॥ १६ ॥ मोदक दै निज दासन को मोहिं सांच भरोसो दया तो करैगो। जेहि के शिर पै श्रीगंगा लसैं सोई साहेब मोर दरिद्र दरैगो ॥ भूत औ प्रेत पिशाच अहैं जेहि बाहन बैल सो दाया करैगो। जन प्यारे कहै मोहिं आश बड़ी श्रीशंकर जो तनताप हरैगो ॥ १७॥ भस्म बिराजत अंगन में औ कमंडल में जल गंग लियो है। कंठ गरल्लकी बास अहै मानो शोभा में शोभा अनन्द भयो है ॥ भंग को घोटत पार्वती जो सतीमातुजी अरधाङ्गि कियोहै। भंगको छानि लै आई सती जन प्यारे शिवा शिव पान कियो है ॥ १८ ॥ भाल बिराजत चन्द्रकला अरु

कानन में छवि कुंडलछाजै। शीश जटा मधि गंगबहै जिनमें तनभंजनकै अघभाजै॥ भस्म रमावति अंगनमें मुदमंगल शिव जनके नित साजै। सोई शिवा शिवको मैं नमों नित साजत हैं जन प्यारे के काजै॥ १६॥ दाहिने करमें वे त्रिशूल लिये निज दासन शंक मिटावन को। जन पै जब देखत हैं दुखको तब धावत बार न लावनको॥ अरि के दल को सब खण्डकरैं निज दास पै आयो न लावन को। जन प्यारे कहै तेहि ईश नमों दुख दारिद दोष नशावन को॥ २०॥ बायें करमें शिव व्याल लिये पति पार्वती मन भावन को। नित ध्यानधरै जगमें नर जो छल छांड़िकै टेक लगावन को॥ कोई औरे की आशा नहीं जग में एक शम्भु समाधि जगावन को।

जन प्यारे कहै वै धन्य अहैं शिव दासन दास
कहावन को ॥ २१ ॥ हरबास करैं नितही गिरि
पै जन टेर सुने चट धावन को । दुखदुन्द कराल
घनी विपदा अवकी सब खानि नशावन को ॥ उर
में यहि चाहकरैं हर जो जन के दुख सर्व मिटावन
को । जन प्यारे कहै धनि वै नर हैं नहिं औरे
की आश लगावन को ॥ २२ ॥ दाहिने विभूषण
साजति है औ विभूति रमावत अंगन माहीं ।
वामहिं अंगमें सारी अहै छबि देखि कै यों सुर-
कन्या लजाहीं ॥ दाहिने विभूषण सों छबि राजित
भाल में चन्द्रकला है सदाहीं । जन प्यारे शिवा
शिव क्या छबि है मानो कोटिन काम कला ल-
लचाहीं ॥ २३ ॥ मोहिं आश बड़ी तुम्हरी चित में
दुख फंद सबै शिव शम्भु कटीजै । सुंदर वाहन बैल

सवारी सो आय अबै हमरी सुधि लीजै ॥ भोला स्वरूप तुम्हारो अहै अपने चख सों मोहिंहेरि तो लीजै । मांगत प्यारे यही करजोर अरे शिवजी निज भक्ति को दीजै ॥ २४ ॥

क० । ऐसो प्रणभारी कोउ नाहिंन त्रिलोक माहिं जैसो श्रीशंकर तुम परण प्रमान है । सती परत्याग कियो जब आदि ब्रह्म मिलीजाय करी छल रूप जानकी समान है ॥ शिव अन्तर्यामी सबमर्म उरजानकर शिवा छांड़ि दीन सब जानत जहान है । कहै जन प्यारे सती ह्वैगई निराश जब जाय पितुमख तजि दीन्ह निज प्रानहै ॥ २५ ॥ निज अपमान सुनि सती तन हानि सुनि बीरभद्र कोप करि तुरत पठायो है । जाय के तुरत तिन दत्तबुरी गतिकरी और सब यज्ञको बिध्वंसन करायो

है॥ हाहाकार पूरित नृपति सब भागि चले शिव अरि ढूंढ़ि २ भूमि में गिरायो है। कहै जन प्यारे नाथ जितने तुम्हारे अरि करी शत्रुकरणी सो ऐसो फल पायो है॥ २६॥

सवैया। इक ओर पिशाचन शोर कियो अरु भूत भली बिधिसों सब गावैं। सब योगिन खप्पर साजति हैं अरु भैरव जोर सों शोर मचावैं॥ बामहि अंग जलूस घनो बहु किन्नर आदि मृदङ्ग बजावैं। जन प्यारेको आश सदा शिवकी भव बारिधि से मोहिं पार लगावैं॥ २७॥ डमरू औ त्रिशूल लिये कर में अंग बामहिं पार्वती मात सोहैं। एक ओर नन्दी सुर बाहन है अंग बामहिं में मृगराज हुतो है॥ एक ओर में ऋद्धि तो बास कियो एक ओर सही सब सिद्धिन के है। जन

प्यारे की शम्भु करो मति सो यहि रूपन पै जो सदा मन मोहै॥ २८॥ दहिने गणनायक आसन है जिनको शुभ नाम त्रिमण्डल माहीं। वेद उजागर जासु भनै प्रथमै सुर औ नर ध्यान कराहीं॥ अंग बामहिं में षट्आनन हैं जिनको हरिभक्त सदेहु सुहाहीं। जन प्यारे को आश अहै सबकी निज किंकर जानिके दाया कराहीं॥ २९॥ बड़ भागि अहै उन जीवनकी जिनको बिधिना नर को तन देत है। तापर ओखर के सम डोलत जन्म पदारथ को दगा हेतहै॥ धर्म से दूरहिं भागि चलैं मानों अमृत छांड़ि विषैपान लेत है। जन प्यारे भजैं शिवको जे नहीं जगमें मूढ़ते नर जीवत प्रेत है॥ ३०॥ जे नर जुक्त जुवा बश डोलत औ पतनी परसों रति लावैं। अन्त समै

यमत्रासनमें यमदूत बली बहु दण्ड देखावैं ॥ जात अहैं यमके करमें तहँपै कछु नेकहु बात न आवैं। जनप्यारे कहैं बहु मुष्टिक मारत लोह तचाइके अंग लगावैं ॥ ३१ ॥ क्रोध बढ़ावत लोगन में कटुबानी कहैं द्विज संतनमाहीं। नीच प्रसंगको मानत हैं अरु भक्तन पासहि जात डेराहीं ॥ पर नारिन में दिनरैनि रमैं अरु लोभके लालच झूंठ कहाहीं। शिवशंकर पूजत नाहिं भले जनप्यारे कहै नर प्रेत वै पाहीं ॥ ३२ ॥ रूप गुमान फिरैं जगमें नहिं जानत हैं शिव दीनदयाला। द्विज देवताको पहिचानत ना अरु भूले फिरैं जगके भ्रमजाला ॥ अन्त समय सब सोचिपरै शिवशंकर बीमुखको अस हाला। जनप्यारे कहै कछु नाहिं बनै फिर जात अहैं नर्क मध्य कराला ॥ ३३ ॥

दो०हे मन मूरख बावरे, कर शंकर को गान ।
तबहिं मिलै आरामगो, जबज पुशम्भुसुजान ॥

सवैया । मीठेभे बोलत लोगनमें शिवशंकर की बहु सेवा कराहीं । नीच प्रसंग विषय सम जानि हरी हरभक्त के पास बिठाहीं ॥ मन प्रेम बढ़ाइके ध्यान धरैं अरु लोभ नहीं जिनके मनमाहीं । जन प्यारे कहै चन्द्रशेखर जानत अन्त समय शिव के पुर जाहीं ॥ ३४ ॥ दान जेवांइकै देत भले विधि हैं शिवशंकरके नित दासा । आनकी वस्तु विषय सम जानि औ आपनि द्रव्य सों दान करासा ॥ शील संतोष दया उर है सपने न करैं परदार में हासा । जनप्यारे कहै सुख भोगें भलेपावैं अंत समय शिव लोक को वासा ॥ ३५ ॥ बहु दुष्टनको शिव खण्ड कियो तेहि भेजि रसातल में कसि हैं । निज दण्ड

औ मुष्टिक मारतहैं शिवके गण ताहि खुबै ससिहैं॥ शिवशंकर जे जस गान करैं तिनमें चन्द्रशेखर जो बसिहैं। जनप्यारे कहै कब भागि उदय जेहि रुज हरीहरसों फँसिहैं॥ ३६॥ शिवजी तौ आश लगाई रहउँ नहिं पौरेनकी मोहिं आश रही। बड़ दानिन के दरबार गयो फिर नाहक सूमकी आस चही॥ कल्पवृक्ष मिलो जेहि जीवनको तिन नाहक नींब की आश गही। जनप्यारे कहै तुम से को बड़ो जेहिके दरबारमें जाय रही॥ ३७॥

छं० गी०। दरबार जाय रहौं कहां अस दानि हौं नहिं पायहौं। बहु आश मम उर में बसी जपि नाम पाप नशायहौं॥ भवबन्ध कटत कलेश घटत औ भस्म भाल रमायहौं। जनप्यारे परिहारे आश सब यक शम्भु आश लगायहौं॥ ३८॥

सवैया। दुखसागर में शिव बूड़त हौं किरपा करिकै मोहिं पार करीजै । तुम्हरे सम ना कोउ दानी मिल्यो जेहिकी शरणागतिसों गति लीजै॥ बहु दीनन को तो सनाथ कियो हमरी बेर नाथ कहां देर कीजै । जनप्यारे कहै शिव बांह गहौ नतु मैं दुखसागर में प्रभु भीजै ॥ ३६ ॥ शिवजी यक आश यही जनको अपने चरणों कर किंकर कीजे। तनके दुख दोष मिटाय सबै निज भक्तन की सतसंगति दीजे॥ तुम्हरे नामको रसपानकरों जबलों मैं जियों यहि आनंद भीजै । जनप्यारे हरीहर मों बिनवों तुम्हरी यक आनकी आश न कीजे ॥ ४० ॥ कर जो करमें तिरशूलधरे अरिको बधिकै जनके सुखदाई। मर्दि औ गर्दिकै चूर्णकरैं अरिके कुल को सब देत नशाई॥ निज भक्तनको

प्रतिपाल करैं जनके कुल को सब देत बसाई। जनप्यारे हरीहर से को बड़ो केहिकी असि रीति दया प्रभुताई ॥ ४१ ॥ हम पापी सुरापिन में बढ़िकै प्रभु ऐसो है कौन जो पाप नेवारी। तुम्हरे बिन नाथ कृपा को करी हमरे ऐसे पापिनको दुख टारी ॥ जो तौ पापको ख्याल करो प्रभुजी तौतो नाहीं अहै हमरी निस्तारी। जनप्यारे कहै मैं निराश नहीं भोलानाथ लेहैं सुध बेगि हमारी ॥ ४२ ॥ कीन्हेउँ नहीं करणी इतनी जेहिके बलसे चित धीर बिचारी। विप्र जेंवाय न दान दियो अरु नाहिंन संतको संग सँवारी ॥ यक आश यही उर मध्य बसै शिवदीनदयालु अहौ त्रिपुरारी। जनप्यारे कहै मैं निराश नहीं भोलानाथ लेहैं सुधि बेगि हमारी ॥ ४३ ॥ भस्मासुरको वरदान

दियो तब आप सहेउ दुख संकट भारी। सोई स्वरूप को ख्याल करों जेहि मूरतिको हरि आप सँवारी॥ जब लंकहि जात कपीशन के सँग ताछिन तोहिं थपेउ गिरिधारी। जन प्यारे भनै मैं निराश नहीं भोलानाथ लेहैं सुधि वेगि हमारी॥ ४४॥ हे शिव तो महिमा प्रभु आप बखानत हैं कपि रीछन माहीं। सो नर भावत ना सपने मम दास बने शिवद्रोही कहाहीं॥ शिव के सम को प्रियहै हमका बैठे भालु औ कीशनको समुझाहीं। जन प्यारे कहैं हरि आप भनै शिव-द्रोही हैं वे नर नर्कको जाहीं॥ ४५॥ शंकर वीमुख जे नरहैं अरु भक्ति हमारी चहैं मनमाहीं। सो नर मूढ़ अहैं मतिमंद परे तेहि ज्ञान पै गाज पराहीं॥ शंकर प्रिय ममद्रोही रहैं शिवद्रोही बने

मम दास कहाहीं। जन प्यारे कहै हरि आप
भनै शिवद्रोही हैं वे नर नर्कको जाहीं ॥ ४६ ॥
मम शम्भु में है कछु भेद नहीं जिन भेद कहेउ
तिन सर्व नशाहीं । जे सुमिरे शिव पार्वती
छल त्यागिकै ते हमका प्रिय आहीं ॥ जिन शम्भु
भजे मानो मोहिं भजेउ जिन मोहिं भजे मानो
शम्भु भजाहीं । जनप्यारे कहै हरि आप भनै
शिवद्रोही हैं वे नर नर्क को जाहीं ॥ ४७ ॥
चारि पदारथ हैं तिनके जिनके उर में शिव
बास रही । दुख दारिद दोष नशाई सबै
पोरे पाप नशै कहै वेद यही ॥ कहौ को प्रिय है
शिवके सम मोकहँ को असि भक्ति हमारी लही।
जन प्यारे कहै शिवको राम बखानत शीलिल
चित्त है पाप दही ॥ ४८ ॥ बहु कालन के शिव

पाप नशावत जो सपने मध्य नाम कही । ज्ञान बढ़ावन नामहै पावन जो सपने मध्य नाम कही ॥ भक्ति मोरि अहै शिव के करमें जलाधीन ज्यों जीवन मीन रही । जनप्यारे कहै शिवको राम बखानत शीलिल चित्तहै पाप दही ॥ ४९ ॥ यह आश्चर्य की कछु बात नहीं कपि शीछन ते प्रभु आप कही । शिवके नाम से कछु दुर्लभ ना धन दर्ब बढ़ावत सर्व सही ॥ जोनर चाहत भक्ति मेरी शिवशंकर नामपै ध्यानगही । जनप्यारे कहै शिव को राम बखानत शीलिल चित्तहै पाप दही ॥ ५० ॥

क० । शंकर उदार देत दीनन अपार सुख कटत कलेश पाप पुंज दूर कीजिये । तम दोरि करेहु हरौहु दुचिताई चित आनँद महान भक्त भाव प्रेम भीजिये ॥ तुम्हैं गुनगान करों तुम्हरो

बखान करों तुम्हरे स्वरूप रस आनँद सो पीजिये।
कहत प्यारेजन याही शिव मांगतहौं अपने चरण
कंज रेणु मोहिं दीजिये॥ ५१॥ कासे जाय कहों
दुख कोउ न सुननहार जासे जाय कहूं तहूं नहीं
यश पाऊं मैं। पाऊं मैं न आश अस दानिहों कहूं
न सुनी अंत कहां आय निज हेमको गवाऊं मैं॥
वाऊमें न जायहों जहां न है तुम्हारी रुचि तुम्हरे
चरणदास ताको गुनगाऊं मैं। गाऊं मैं तुम्हारे
पदकंज के सरिस मंजु कहै जनप्यारे बैलवाले हो
सुनाऊं मैं॥ ५२॥ नाऊं मैं औ गाऊं मैं औ ठाऊं
औ कुठाऊं माहिं देश परदेश माहिं नाथ जहां
जाऊं मैं। जाऊं मैं जहां पै तहां चरण कमल देह
सुरसरि शीश तौ न मूरतिको पाऊं मैं॥ पाऊं मैं
तुम्हारो दास ताहिको नवाऊं शीश याही नेम बढ़ै

बारबार यश गाऊं मैं । गाऊं मैं तुम्हारे पदकंजके सरिस मंजु कहै जनप्यारे बैलवालेहो सुनाऊं मैं ॥ ५३ ॥ काशीको बिलास कैलासकर वास चार वेदन प्रकाश नाम शंकर कृपाल है । जन आनंद दे वास भववारिधि तरास खल वृन्दन को नास गर्ज केहरि कराल है ॥ अंग माहिं भस्म भास कर डमरू बजास संग योगिनी तमास शिवशंकर दयाल है । काटि देत यमफांस तम दूरिको करास पाप पुंजकर नास तौ दास प्यारे लाल है ॥ ५५ ॥ तोरे मनमूरख बृथाहीकत घूमति है ध्यवत न शंकर जो शीलको पहार है । पावत विविध फल भावतहै जौन मन ध्यावतहै नेक· प्रानी शंकर उदार है ॥ अस दीन सुख देवै दया दृष्टिसो निहाल करै ताहि विसराय कहां चैन औ

बहार है। कहै जन प्यारे मन मूढ़ हे हमारे सुनौ आस शिवरामजीकी आन धोखादारहै ॥ ५५ ॥

ज्यों पतंग दीपपर भागीरथ गंगपर ज्यों चकोर चन्द्र प्रेम निसुसों पगीरहै। ज्यों पपीहा स्वातिपर मीनदेखो वारिपर वंशी धुनि तानपर गोपिका ठगीरहै ॥ ज्यों भुजंग बेनपर कामी त्रियनयनपर ज्योंही धेनु बच्छपर चाटिबे चगी रहै। वैसे सीया रामपर और शम्भुशिवापर कहै जन प्यारे मम लगन लगीरहै ॥ ५६ ॥

सवैया। भागीरथी कीधों ज़ोर कियो कीधों भस्मरमावनिमें भई देरी। व्याल सबै कीधों बांधिनि को गये कीधों सतीजीकी अज्ञानहेरी ॥ कीधों हमैं बड़पापी लख्यो किधहों कलि जानि तुमैं मति फेरी। जन प्यारे पुकारि करै अरजी

मरज़ी तो करौं मोहिं आशहै तेरी ॥५७॥ सुनले शंकर मेरी अर्ज़ को कानसे अपनी ख़िदमतमें मुझको लगायाकरै। शिरपै गंगाधरे है गलेमें ज़हर चाँद मस्तकपै रौनक़ दिखायाकरै। चश्म तो तीन हैं दस्त में शूलहै जिस से दासों के संकट हटाया करै। अब इनायत नज़रसे हमारी ख़बर प्यारे अहिक़रको ख़िदमत लगाया करै ॥ ५८ ॥ कोह कैलासपै बास हरवक़्तहै कभी दासों के दिल मेंभी पाया करै। शान शौक़त बड़ी रहम दिल ज़ाहिरा चश्म दासोंमें हरदम समाया करै ॥ ख़िल्फ़ फ़ीलेबदन जिनके एकै रदन शेह जहानों में पेश्तर पुजायाकरै। ले इनायत नज़र से हमारी ख़बर प्यारे अहिक़रको ख़िदमत लगायाकरै॥५६॥ मुल्क मुल्कोंमें तेरी चमक होरही चारोंसूमें सिफ़त

आपकी हैं अयां । जाहओ मालओ बड़ा रुतबा देतेहौ तुम चार वेदोंने ऐसा कियाहै बयां॥ सदक़ ईमान से जिसने तुमको भजा उसने की ऐश अशरत यहां औ वहां। प्यारेके दिलमें खन्जरहनो इस्मका जिससे शंकर शबो रोज़ मुखसे बयां॥६०॥

दो०सरितापति ताकी सुता, ता प्रिय वाहन जौन।
ताभख जेहि शिरपर बसैं, सुधिलेहै मम तौन॥

स्तुति श्रीभगवान्जी की।

सवैया। ए प्रभुदीनदयाल कृपा करु मैं मति-मूरख नाथ अनारी। ज्ञानकी दृष्टिसों नाम न जानत औ सब छांड़ि न भक्ति तुम्हारी॥ नित भरमत हौं जगजालन में अरु जात जहां तहँ बाजौं लबारी। जनप्यारे कहै तुम्हरे बिन नाथ वृथा धन

द्रव्य पिता सुत नारी ॥६१॥ तौ भक्तनको सतसंग नकी अरु नाहिंन संत सभाको बिठारी । विप्र जेंवाय न दान दियो कछु नाहिंन विप्रको सेव-नहारी ॥ केहि सुकृतसे मन धीर धरों मैं तो पापी महाविष गाहककारी । जनप्यारे कहैं तुम्हरे बिन नाथ वृथा धन द्रव्य पिता सुत नारी ॥६२॥ रंकसे राव कियो छिनमें प्रभु दायाकी दृष्टिसे दीननि-हारी । पापी अजामिल को गति दै और व्याधहि कीन निहाल मुरारी ॥ तिन पापिन से हम हैं बढ़िकै इतनी कहँ भागि है नाथ हमारी । जनप्यारे कहैं तुम्हरे बिन नाथ वृथा धन द्रव्य पिता सुत नारी ॥६३॥ प्रह्लाद हरीहर टेक करी तब मातु पिता गुरु लोग कसी है । कबहूं गिरि से तेहि छांड़तहैं कबहूं विच बारिधि मध्य धसी है ॥ नाम प्रभाव सबै

कष्ट सों बचि बाजनकी प्रभु कौन हँसी है। जन प्यारे कहै हरणाकुश मारिकै लै प्रह्लाद बैकुंठ बसी है॥६४॥ द्रुपदी रानी पै जब कष्ट पर्यो कौरवनाथ जुवां खेलि घातकरी है। पति पांचहुँ पांसा हारि गये तब बोलि दुशासन हुक्म करी है॥ खैंचि सभामध्य लाये दुशासन यों द्रुपदी हरि टेर करी है। जनप्यारे कहै द्रुपदी यों पुकारत हे राधारमण मों लाज हरी है॥६५॥ हे गरुड़ध्वज दीनदयाल बड़े खल या जग दाह करी है। प्रह्लाद को दुःख मिटायो सबै हरणाकुश मूढ़को पेट फरी है॥ जब आगि लगी सब गोप बचायहु सो सुधि नाथ कहां बिसरी है। जनप्यारे कहै द्रुपदी यों पुकारत राखहु लाज हमारी हरी है॥६६॥ बांह उठावत भै हरिके दिशिताछिन तीनहु लोक डरी है। शेष डिग्यो

धरणी सब डोलत औ नभमंडल शोर परी है॥ जाय अवाज़परी हरि कानन छोड़िकै लक्ष्मी दौर करी है। जनप्यारे कहै द्रुपदी यों पुकारत राखहु लाज हमारी हरी है॥६७॥ जायप्रवेश कियो तनमें हरि चीर चहों दिशि बाढ़ि करी है। ज्यों बरजोरहिं खैंचत है त्यों अम्बर बाढ़िकै ढेर धरी है॥ जब नाहिंन ज़ोर चल्यो है कछू यों दुशासन लाज हृदय में भरी है। जनप्यारे कहै द्रुपदी राखिकै तब देवन जय जयकार करीहै॥६८॥ बावन ह्वैकै छल्यो बलि को प्रभु बावन अंगुलरूप धरी है। जाय अवाज़ करी हरि जो बलि यज्ञहि छांड़ि प्रणाम करी है॥ पायँ पखारत लैचरणोदक शीश लगाइकै पान करी है। जनप्यारे कहै बहुपितृन तारिकै आप रसातल बास करी है॥६९॥ बलि पूंछतहैं द्विजजी कहिये केहि

कारण मोहिं सनाथ करी है । आयसु होइ सो बेगिकरों प्रभु नाहक को अब देर धरी है ॥ बोलत विप्र भये बलिसों मोहिं नाहिंन माल खजाना परी है । जन प्यारे कहै पग तीनहिं सों लैके तो छलिया छल जायकरी है ॥ ७० ॥ बलि दानी कहैं द्विज भूले फिरो काम तीनहीं पैगसों कौन सरी है । कृष्ण कह्यो मोहिं और नहीं कछु तीनहीं पैग में राजभरी है ॥ गुरु दैत्यन के समुझायो खुबै बलि राजा नहीं कछु कान करी है । जनप्यारे प्रभू पग तीनहिं लै नापि राज सबै पगपृष्ठउ धरी है ॥ ७१ ॥ डोलै न देत घरीक लों पापसों माया सबै जग आनि खलोहै । ना भजनेदेत नन्दके लालको जो भजयुवतिन काहिं छलोहै ॥ कुञ्जनमें बिचरंत सदा नरदेह लई जनके हितलो है । प्यारे कहै नर

देह वृथा ब्रजकी रजलागि पपील भलो है॥ ७२॥
बनबेलि लता लहराइरहीं द्रुमऊपर आइ विहंग
पुकारैं। बनकुञ्जन देखि जियाहुलसै यमुनाजल
अमृतसों दुखटारैं॥ धेनु अनन्दकरैं अतिशै जहँपै
नित राधा औ कृष्ण विहारैं। प्यारे कहै धनि वे
नरहैं ब्रजभूमि गये हरिग्राम निहारैं॥ ७३॥ जन्म
लियो बसुदेव किहां प्रभु जाय रह्यो तुम नन्दके
धामा। पूतना आई पियावन दूध सो पीवतक्षीर
लियो हरिजामा॥ बालचरित्र लगे करने नित
खेलत सङ्ग सखा बलरामा। प्यारे पुकारि करै
अरज़ी मोहिं भक्तिदे आपनि हे घनश्यामा॥ ७४॥
आइगयो शकटा तुरतै पदपङ्कजसों तेहि मारि
गिरायो। मातु पिता बड़ शोच करेउ ब्रजलोग
सबै तब आश्चर्य पायो॥ मुखकोमल नाथ पसारि

दियो तेहिमा तिहुँलोकहुँको दरशायो। प्यारे पुकारि
करै अरजी प्रभुदे पदकञ्ज यही मनभायो ॥ ७५ ॥
केशीस्वरूप कियो अश्वको दलगोपन माहिं
पहूँचेउ आई। कृष्ण लखेउ यह दैत्य अहै निज
प्राणहि त्यागि मेरे पुर जाई॥ धाइ तबै तुरतै पद
को गहि ताहि निपाति महीमें गिराई। प्यारे पुकारि
करै अरजी निजभक्ति दे मो मनमें यह भाई॥ ७६॥
आइ बकासुर गो ब्रजमें ब्रजलोगन को वह घात
करोजू। मुख मध्यमें लाय लियो हरिको हरि अङ्ग
बढ़ायके चोंचफरोजू ॥ मुखमध्यसे दामिनि यों
निकसे अरिकाहि निपाति सो शोकहरोजू। प्यारे
पुकारि करै अरजी घनसांवरो मो मन में ठहरो
जू॥७७॥आयो तृणावर्त कोपभरो छल जानि लियो
तुरतै बनवारी। ताहि निपाति दियो निजधाम

नहीं कछु ताअवखानि निहारी ॥ निजधाम दियो व्रजशोकछयो भये मातुपिता सुदमंगलकारी। प्यारे पुकारिकै अरज़ी हमरेउर आश मेरोदुखटारी ॥७८॥
कंसकहाय पठायो व्रजै नन्द मोहिंक मल्लके फूल पठीजे । जो नहिं फूल प्रभातमिलैं सुत दोउ तेरे और तोहिं बँधीजे ॥ कृष्णतबै कूदि कालिया नाथिकै फूलपठै सबशोक हरीजे । प्यारे पुकारि करै अरजी अहिनाथन श्याम मेरी सुधि लीजे ॥ ७९ ॥
व्योमासुर दैत्य गुमानभरो कंसराय पठाय दियो व्रजकाहीं । खेलतश्यामरहैं जहँपै छलबात किये खेले गोपनमाहीं ॥ जानि छलैया बलैया सबै हरि मारेउ मूढ़ छिनै यकमाहीं । प्यारेपुकारि करै अरज़ी मनमोरलगै पदपङ्कज पाहीं ॥ ८० ॥
जानिलियो मन में निजकंस ये कालहैं मेरे

कछू न बसाई। युक्ति अनेक करै मनमें नहिं लाग-
तिहैं कछु ताहिउपाई॥ यह कीन्ह बिचार कि कृष्ण
बुलावहु तबै अक्रूरको बोलिपठाई। प्यारे पुकारि
करै अरज़ी घनसांवरो जो ममपाप नसाई॥ ८१॥
अक्रूर पहूँचिगये ब्रजमें कहेउ देखनयज्ञ चलो यदु-
नाथा। अरि मारनको घनश्याम चले नन्द आदि
सबै गणगोपहैं साथा॥ मातुयशोमति भै दुखिया
ब्रजकी सबनारिन कीन्ह अनाथा। प्यारे प्रभू पहुँचे
मथुरा कुबिजा को कियो सबभांति सनाथा॥ ८२॥
जानेउ कंस कि आयेहैं कृष्ण तबै गजमस्त दुआरे
झुमाई। बलराम पुकारि कहैं गजपालन क्यों गज
को नाहिंलेत हटाई॥ सो सुनि कोपकरेउ गजपालन
औ गजको दियो अग्र चलाई। प्यारे के ईश दोउ-
भ्रात तो गज काहि हनेउहै खेलाइ खेलाई॥ ८३॥

कंस सुनेउ गजहू मरिगो तब चांडूर मुष्टिक लीन हँकारे। बांधिलँगोट बजाइके ताल दोऊ बड़शोर झुकेहैं अखारे॥ एकसों कृष्ण औ एकसे राम सो बांधत दांवन दांवअपारे। प्यारे लखैं मथुरा नर नारि औ देखतही दोउ दुष्टपछारे॥ ८४॥

भयबश होतभयो तब कंस मचान चढ़ेउ तल॰ वारलै भारी। ढूंढ़तजात चले अरिको लखि मंचपै कोपकरेउ बनवारी॥ लै चुटियां करमें घनश्याम सो मंचके ऊपरसे महिडारी। कूदिपरे उपरै घन- श्याम बधेउ अरिको होत जयजयकारी॥ ८५॥

दो॰ दुष्टहनेउ यदुनन्दन, भैनभजयजयकार।
हर्षित देवता करतभे, पुष्पन वृष्टिअपार॥

छं॰। भै वृष्टि अपारा जगउजियारा देवन जय जयकार करी। धनिहौ बनवारी जन हितकारी गो

द्विजको प्रतिपाल करी॥ जब दुःख अपारा भा
संसारा नाथ तुम्हैं सब शोक हरी। जनप्यारे कहई
मम अघ दहई जय जय जैति कृपाल हरी॥ ८६॥

सवैया। कंसहि मारि गये निजधाम औ मातु
पिताकर बंध छुटायो। देवकी औ बसुदेव अनन्द
भे लाय लिये उर शोक मिटायो॥ गोद लिये मुख
पंकज चूमत ज्यों दुखिया अपनी निधि पायो।
प्यारे कहैं बसुदेव ललाभये नन्दबबा कहँ धाम
पठायो॥ ८७॥ दौरि यशोमति देखति भै मेरो
आवत है आज सुन्दरश्यामा। नन्दहि देखत
शोकभरे नहिं संगहि श्याम लखे नन्दबामा॥
शोक यशोमति रोय बढ़ावत पीटतहै करसों निज
जामा। प्यारे यशोमति नन्द सों भाखत श्याम
बिहाय कहा गृह कामा॥ ८८॥ ब्रजबाम सुनेउ

आये नन्दबबा नहिं साथ अहैं तिन्हैं कुंजबिहारी । अक्रूर को देती हैं दोष सबै और शोक भरी दृग सों जल डारी ॥ बिरहागि बिथा तनमें है जगी उरमें कर मारि पुकारैं बिहारी । प्यारे रटैं नितहीं घनश्याम बिना दधिचोर दुखी ब्रजनारी ॥ ८६ ॥ गोपसुता कबहूं यमुनातट धाय कबौं बन कुंजन जाहीं । सांझ समै गलियारन बैठिकै देखती हैं गो बृन्दन माहीं ॥ गोरसकी मटुकी शिर धारि कै टेरती हैं घनश्याम जू खाहीं । प्यारे कहैं ब्रजकी अबला घनश्याम मिलो नतु जीवन नाहीं ॥ ६० ॥ रास बिहारी कियो जहँपै अबला उरिकै तहँ पै चलि जाहीं । बृच्छन बृच्छन ढूंढ़ती हैं और देखन जाहिं कदम्ब की छाहीं ॥ कान लगाय सुनैं बँसुरी धुनि कृष्णबिहारी बजावत नाहीं । प्यारे कहैं ब्रजकी

अबला घनश्याम मिलो नतु जीवन नाहीं ॥ ६१ ॥
दो०उतमोहनमनमें लखेउ, कीन्हेउब्रजको ख्याल ।
बहुतदिवस बीततभये, नहिंपाये कछु हाल ॥
यशुदा माता नन्दजी, औ ब्रजके सबग्वाल ।
ब्रजबनितामम शोकवश, होइहैं विकलविहाल ॥
अबब्रजकी सुधिलेनको, करिये कछू उपाय ।
धीरज दे आवै कोऊ, जीकी तपनिबुताय ॥
क०-राखैंगी न प्राण यह जानिके कुँवरकान्ह
तबहीं बुलायो ऊधो परम संघाती को ॥ लिखेउ
बैराग अनुराग और योग बड़ नेत्रन में धारिबारि
दीन्हेउ दै पाती को ॥ कहेउ यह पाती सब गोपिन
सुनाय दीजो हमरी है चाह उन्हें जैसे पिक
स्वाती को । कहत पियारे श्याम राधिका सुरति करि
भाखत सखा सों नाहिं बोध होत छाती को ॥ ६२ ॥

सवैया । ऊधो चले रथ साजि व्रजै और जाय पहूंचि गये व्रजमाहीं । आवत देखेउ रथै अबला सब जानेउ यही चितचोर ये आहीं ॥ धायसमीप गईं रथके तेहिमा व्रज साँवरो नाहिं लखाहीं । प्यारे तबै पतिया जौन श्यामकी ऊधो दियो कर गोपिन माहीं ॥ ६३ ॥ लै पतिया छतिया सों लगावत नयनन बारि भरे व्रजनारी । ऊधो संदेश कहो बलिराम औ नीके अहैं मम कुंजबिहारी ॥ वै कुब्जा पटरानी कियो अब काहे करैं हरि चाह हमारी । ऊधो हमैं निशि द्योस न भावत यों गति भै जैसे मीन दुखारी ॥ ६४ ॥ प्यारे सबै गोपिका जुरिकै मन मोहन की पतिया को निहारी ॥

क० । कैसी यह पाती ऊधो तुम हो संघाती श्याम ऐसे रस पागि कहो कैसे योग धारेंगी ।

भूषण बसन निज अंगन सुधारें नित तिनको उतारि, मृगछाला अंग डारेंगी॥ हम से न ह्वै है योग अबला पुकारि कहैं साँवरी सुरति पर निज प्राण वारेंगी। प्यारे मन मोहन बिन जीबो है हमारो धृग श्यामके बियोगमें कटारी हनि मारेंगी॥ ६६॥

हम सबै गोपी बड़े बड़े महलन रहि कैसे बन जाय दिनरैन को गुजारेंगी। सुंदर प्रसून सेज श्याम संग बास करि कैसे कै बिछाय डाभ निज तन मारेंगी॥ कुंजनबिहार और बृन्दाबन केलि करि कृष्ण संग रास करि कैसे भस्म धारेंगी। प्यारे मन मोहन बिन जीबो है हमारो धृग श्याम के बियोग में कटारी उर मारेंगी॥ ६७॥

सवैया। ऊधो संदेश कहेउ हरि सों हम हैं सब भांतिन श्यामकी चेरी। औ रसखान चुराय

के फोरन जो मटुकी शिर पै मम हेरी ॥ औ अँगिया मसकान मेरी गहिबो निज अंगन को झकझोरी। प्यारे कभी बरजों नहिं मोहन ना सखियां बहियां गहैं तेरी ॥ ६८ ॥

दो० ऊधो ब्रजगोपिन दशा, लखिमन भये उदास।
अबब्रजसे चलिबोउचित, चलोंकृष्णके पास ॥
बनितनको समुझायके, सबविधिधीरजदीन।
गोपिनकोधनिधन्यकहि, मथुरामारगलीन ॥
हे मुरलीधर साँवरो, सुंदरश्यामसुजान।
प्यारे के उर में बसो, देहु भक्ति बरदान ॥

क०। एहो ब्रजबासी यमुना के तट वासी सुधि बेगि क्यों न लेत दुख दीनन दरैया है। सुधि लेत नन्दलाला जड़योनि जो कराला कहो जात है कहां कमाय कानन चरैया है ॥ तुम

अहौ ब्रजचन्दा संग गोपिन फरफन्दा नाथ बेगि सुधि लेत जड़योनि जो चिरैया है । कहै जन प्यारे प्रभु नेक दया धारे अब आके सुधिलेहु मम पातक टरैया है ॥ ६६ ॥

सो० नागर नन्दकिशोर, सुन्दरब्रजको चोरदधि ।
है सोई स्वामी मोर, प्यारेकोसब विधिहितो ॥

दो० अवधपुरीआनन्दअति, भये नृपदशरथबाल ।
नृपदशरथ प्रमुदितभये, शोकछये ततकाल ॥
अवधपुरी शोभाभई, जबते प्रकट कृपाल ।
सुखद बयारी बहत अति, कहै पियारेलाल ॥
भरत राम अनुहारि थक, सुन्दर दोउ सुजान ।
लषण रिपुदमन एकसम, प्यारे करत बखान ॥

चौ० सुन्दर सुतरु वायुमन भावन । फूलत पुष्प अनेक सुहावन ॥ आय बसन्त बेलि लहराई ।

गुञ्जत फिरत मलिन्द सुहाई ॥ पिक आदिक बोलत शुभबानी ॥ भयो सुहावन सरयू पानी। मातु पिता आनँद मन भरहीं। ज्यों ज्यों बाल चरित हरि करहीं ॥

दो० बालचरित ममनाथ करि, पुरलोगनसुखदीन।
कहै पियारेलाल प्रभु, मैं दुखिया आधीन ॥

सो० दशरथ के सुत बाल, अजामील दुख दूरिकिय।
कहै पियारेलाल, अति असाध मतिमन्द मैं ॥

त्रि० छं०। मैं मतिमन्दा प्रभु सुखकन्दा चरित गयन्दा ख्यालकरी। गणिका अपकारी परधनवारी नाथ सिधारी लोकहरी ॥ अघसूरति बधिका पंछिन अरिका तेहिदुख दुरिकानाथकरी। सोइ आश हमारे कहत पियारे जन रखवारे आपुहरी ॥ १०० ॥

क०। धनुष को तोरि परशराम मदखण्ड करि तब

चरचारिपुर अवध सिधायो है। नगर चलतबेर सुख पावै नानाभांति कहै जन प्यारे सबहाल को सुनायो है ॥ सुनि नृप दशरथ साजिकै बरातबहु जाय कै जनकपुर द्वार को करायो है । आज रामचन्द्रतो जनक के जामात्र भयो देखि यह छबि त्रिपुरारी मनभायो है॥ १०१ ॥ गज और अश्व असवारी तो अनेगिनहैं औरबहुभांतिके तो बाजने बजायोहै। पैदल अपार और गाड़ी रथ कौन गिनै भरत रिपुदमन तुरंगको नचायो है ॥ सुरवृन्द निजनिज साजि कै विमान बहु रतन जड़ित रबितेज सों लखायो है। कहै जनप्यारे गावैं सुर कन्यामन्द २ देखि ऐसी शोभा त्रिपुरारी मनभायो है ॥ १०२ ॥ रबि प्रकाश अति शीतल दिखान लाग्यो मन्द पुरवाई सों अनन्द उपजायो है ।

घनकी घमण्ड घेरिआई है बरातपर ऋतु सरदाई में बसन्त तहूँ छायो है॥ बिबिध गंधर्ब राग गाय कै रिझावैं नृप और भाट मागध बिरदावली सुनायो है। कहै प्यारे ऋद्धि सिद्धि रामकी बरात साथ देखि ऐसी शोभा त्रिपुरारी मनभायो है॥ १०३॥ शंकरके सँग भूत प्रेत औ पिशाचघने और मातु योगिनी तो खप्पर सजायो है। अंगमें बिभूति नन्दीसुर असवार ह्वैकै केहरि गरजिज्ज़ोर शोरको मचायो है॥ गले मुण्डमाल शिव भागीरथी सोहै शिर कर में त्रिशूल हर्षि डमरू बजायो है। कहै प्यारे सुरबृन्द नभमाहिं साजि साज ऐसी शोभा देखि त्रिपुरारी मन भायो है॥ १०४॥ जाय के बरात मिथिलेशपूर गै पहूंचि देखि नृप जनक बनात्र मन भायो है। आदर सहित जनवास औ

दुवारकरि भांवरी बिचित्र सियारामकी करायो है॥ लछमण राम रिपुदमन भरतलखिनग्र की सहेली सिया धन्यभागि गायो है। कहत पियारे बहुब्यं-जनतयार करि जेंवत समय में त्रिया प्रिय गारी गायो है॥ १०५॥

दो०नृपदशरथपहुनईकरि, नितप्रति होत अनन्द।
नृप बिदेह देखैं नृपहि, शुभचकोर जिमिचन्द॥
यहि बिधिसे बहु दिवसगे, नृप दशरथ मनमाहिं।
जनकभाव अरु प्रीतिलखि, बिबिधभांति हर्षाहिं॥
तबहिं बुलायो सीयपितु,बहुबिधिकिहिनिबखान।
कह्यौ बिदाई जनकसन, चहौं अवध अब जान॥
नृपतिजनकदायज दियो, को कबिसकत बखान।
जोरिपाणि अस्तुति करत, तुमसम धन्य नआन॥
निज कन्या नृपदेतिहौं, सो प्रसन्न है लेहु।

बारबार बिनती करौं, गृह किंकरी करेहु ॥

छं० गी०। सियबिदा होत बिलाप करुणा जात नहिं मोपैकही। मिल सहेलिन धाय उर लपटाय जननी करगही ॥ शुकसारिका बिलखात गात अधीन ह्वै रोवत सही। यहिभांति जात बिलाप करि सिय सुखित सकल बरातही ॥१०६॥

दो०यहि बिधिसिय औधाहिंगईं, होत मंगलाचार।
कहत पियारे रामसिय, करहु हृदय पैसार ॥

सो०हेदशरथके बाल, कमलनयन अतिनम्रतन।
कहत पियारेलाल, भक्तिदेहु ममसूढ़को ॥

सवैया। हेरसना हरिनाम जपो नतु एक दिना सबही नासिजायगो। जो जगजाल कि लै में फिरै तौ तो एकदिना कुरसनाही कहायगो ॥ माल खजाना कुटुम्ब बड़ो यह बड़ोही बड़ो कोउ संग न

जायगो । प्यारे कहै मन चेतकरो अबहीं बिगरो ना सबै बनिजायगो ॥ १०७॥ रेमनमूढ़ तू क्यों भरमय नित जाल बिषे रस चाखन में। किधौं हियके चख फूटिगये हैं किधौं नहिं सूझत आंखनमें ॥ सोई स्वरूप को ख्यालकरो जौन भूलतना जनलाखन में । प्यारे कहै अपनाओ प्रभू जैसे लागत हैं फल शाखनमें ॥ १०८ ॥

छं०गी० । निज जनन लागि कृपायतन संकट सहेउ हरिजू सबै । कलनापरै प्रभुजी तुम्हैं दुख देखि दीनन को जबै ॥ दुख दासको देखे प्रभू तब लीनहै सुधि ना कबै । जनप्यारे आश यही प्रभू हिरदै बसो आय के अबै ॥ १०९ ॥

सो० हेप्रभुजी करतार, भक्तिदेहु मोहिं आपनी ।
करहु हृदय पैसार, तबै कृतारथ होइहौं ॥

तुम बिन नाथ न कोय, हितू हमारो जक्तमें।
कासे कहौं दुखरोय, तुमबिन जानै और को॥
भक्तनके प्रतिपाल, करनहार प्रभुजी तुमहिं।
नहिंमोहिं भक्तिकृपाल,धीरधरौं केहि सुकृतसे॥
मैं मतिमूढ़ अजान,ज्ञानध्यान मोहिंनाहिं कछु।
बाल आपनों जानि, रोयकहौं हरि भक्तिदे॥
दो०प्रभु जितने पापी रहे, तिनमें मैं शिरमौर।
जो मम पातक हेरिहौ, कहीं नहीं मोहिं ठौर॥
जिमि दम्पति के पुत्र बहु, सबपर रहत सनेह।
कोइमूढ़ ज्ञानी कोई, छूटत नाहिंन नेह॥
हरिहर कथा यथामति, कछुक कीन्ह मैं गान।
अब बरणौं निज तुच्छता,सुजनसुनहु दैकान॥
चौ०बिदित धनरजै तीरथ भाई। जहँ कुरु पांडु
लड़े हैं आई॥ ताके दच्छिण दिशि यक ग्रामा।

जमुवां बिदित तासुकर नामा ॥ राज्य अहै धौरहरा केरी। है बिनोद बहुभांति घनेरी ॥ बसते बिप्रबृन्द बहुतेरे। अरु क्षत्रिन के अहैं बसेरे ॥ तिन सब महँ मैं हौं मतिहीना। कायथ बंश जन्म बिधिदीना ॥ बर्ष अष्टदशाके हम अहहीं। प्यारेलाल मोहिं सब कहहीं ॥ निज गुरुके चरणन शिरनाई। तब प्यारे बिनोद मैं गाई ॥

दो०निज भ्रातन की रायसों,हरिहर सुमिरि अरम्भ।
गणनायक को गानकरि, दूरिकीन सबदम्भ ॥
सन उन्नीसै सात हैं, कार्त्तिक मास सुमास।
शुक्लपक्ष राकातिथी, मम पुरई सब आस ॥
नित्य पाठ जो यह करै, बढ़ै बहुत आनन्द।
अघ नाशै बिपदा घटै, मिटै बुद्धि जो मन्द ॥
गिरिजापतिके बिमलयश,अरुहरि सुयशअपार।
कहिहैं सुनिहैं प्यारे जे, हरि करिहैं भवपार ॥

इति श्रीप्यारेबिनोदलालाप्यारेलालकृतसमाप्तम्। शुभम्।

इश्तिहार।

नाम किताब	क़ीमत
कृष्णसागर	।—)
कृष्णसागरगुटका	॥) पु०
बिश्रामसागर	३) पु०
प्रेमसागरबातसवीर	॥।—) पु०
कृष्णप्रिया	॥≡)
नवीनसंग्रह	)॥
रामसुधा	—)
निबन्धमालादर्श	॥=) पु०
संस्कृत कविपंच	≡) पु०
भवभूति	।—) पु०
मनमोहनी	)॥।
काव्यकल्पद्रुम सटीक	।—)
हफ़ीज़ुल्लाहखांका हज़ारा	॥।=)॥
नखशिखवर्णन सटीक	≡)

मिलनेका पता—नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

॥ काव्य की पुस्तकें ॥

नाम पुस्तक.			मूल्य.
षट्ऋतुकाव्यसंग्रह	....	....	≡)॥
शिवरत्नसंग्रह	....	....	=)
रसिकमोहन	....	....	=)॥
रसप्रबोध	....	....	=)॥
प्रेमरत्नाकर	....	....	≡)॥
श्रीरामानन्दबिहार	....	....	-)
प्रेमतरंगिणी....	....	....	-)।
श्रीसीतारामनखशिख	...	....	-)
कुमारसंभव भाषा टीका सहित		....	।)॥।
विजयविशाल	...	....	=)॥।

मिलने का पताः-

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ.